Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg

कक्षा 12 अनिवार्य हिंदी
अध्याय 7
आत्म-परिचय
हरिवंश राय बच्चन

कवि परिचय

हालावाद के प्रवर्तक हरिवंश राय बच्चन उत्तर छायावाद काल के प्रमुख कवि रहे हैं । हरिवंशराय बच्चन का जन्म 1907 ईस्वी में उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद में हुआ ।वे अपनी काव्य-यात्रा के प्रारम्भिक दौर में मध्ययुगीन फारसी कवि उमर खय्याम के जीवन-दर्शन से बहुत प्रभावित रहे। उमर खय्याम की रुबाइयों से प्रेरित उनकी प्रसिद्ध कृति मधुशाला को कवि-मंच पर जबरदस्त लोकप्रियता मिली। कवि की विलक्षण प्रतिभा इश्क, मोहब्बत, पीड़ा जैसी रूमानियत से भरी हुई थी। वे परस्पर झगड़ने के बजाय प्यार को महत्त्व देते थे। उनकी प्रमुख काव्य रचनाएँ हैं - ***मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश, निशा निमंत्रण, एकांत संगीत, आकुल-अंतर, मिलन यामिनी, सतरंगिणी, आरती और अंगारे, नए पुराने झरोखे तथा टूटी-फूटी कड़ियाँ।*** इनके चार आत्मकथा खण्ड हैं- ***क्या भूलूँ क्या याद करूँ, नीड़ का निर्माण फिर, बसेरे से दूर तथा दशद्वार से सोपान तक।*** इनके द्वारा लिखित '***प्रवासी की डायरी***' तथा अनुवाद ग्रंथ ***हैमलेट, जनगीता व मैकबेथ*** भीलोकप्रिय रहे। बच्चन की मृत्यु सन 2003 में हुई।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1.'साँसों के दो तार' प्रतीक हैं -

(अ) जीवन

(ब) जिज्ञासा

(स) विवशता

(द) उपेक्षा

उत्तर:(अ)

प्रश्न 2.'दिन का पंथी' में अलंकार है -

(अ) उपमा

(ब) रूपक

(स) उत्प्रेक्षा

(द) अनुप्रास

उत्तर:(ब)

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1.कवि ने जीवन के लिए किसे आवश्यक माना है?

उत्तर: कवि ने जीवन में प्यार और मस्ती को आवश्यक माना है। जीवन के प्रति तटस्थ भव को भी कवि आवश्यक मानता है।

प्रश्न 2. कवि स्नेह-सुधा का पान कैसे करता है?

उत्तर: कवि संसारिक बातों पर ध्यान न देकर 'स्नेहरूपी सुरा का पान' किया करता है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1.'निज उर के उद्‌गार और उपहार' से कवि का क्या तात्पर्य है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: कवि का तात्पर्य है कि उसकी कविता में लोगों के प्रति जो प्रेम और मस्ती के भाव व्यक्त हुए हैं, वे संसार के लिए उसकी अपूर्व भेंट है। उसके पास भौतिक वस्तुओं के उपहार नहीं है। वह अपने मनोभावों को समर्पित करके लोगों के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त किया करता है।

प्रश्न 2. 'शीतल वाणी में आग'-के होने का क्या अभिप्राय है?

उत्तर: अभिप्राय है कि कवि की वाणी (कविता) यद्‌यपिहृदय को शांति और शीतलता प्रदान करने वाली है किन्तु उसमें प्रियतम के विरह में व्याकुल कवि के हृदय की वेदनारूपी आग भी सुलगती रहती है। इसे केवल कवि ही जानता है।

प्रश्न 3.कवि ने स्वयं को दीवाना क्यों कहा है?

उत्तर: कवि यह नहीं चाहता है कि संसार उसे एक कवि के रूप में पहचाने। वह तो केवल इतना ही चाहता है कि यह संसार उसे एक प्रेमी और दीवाने के रूप में जाने, जो सारे संसार को प्रेम, मस्ती, आनंद और हर्षोल्लास का संदेश देता है। कवि का यह संदेश ऐसा है जिसको सुनकर सारा संसार झूमने लगता है। इसलिए कभी स्वयं को दीवाना कहता है।

प्रश्न 4. "मैं निज रोदन में राग लिए फिरता हूँ" कहने से कवि का क्या आशय है?

उत्तर: कवि अपने प्रिय के वियोग में अत्यंत व्यथित रहता है, जिसके कारण उसका हृदय रोने लगता है। वह अपने गीतों के माध्यम से अपने मन की भावनाओं को प्रकट करता है। कवि की अभिव्यक्ति रागात्मक है जिसमें प्रिय के प्रति अत्यंत प्रेम झलकता है इसलिए कवि कहता है कि मैं निज रोदन में राग लिए फिरता हूं।

सप्रसंग व्याख्याएँ

1. मैं जग-जीवन का भार लिए फिरता हूँ,
फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूँ,
कर दिया किसी ने झंकृत जिनको छूकर,
मैं साँसों के दो तार लिए फिरता हूँ,
मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ,
मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ,
जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते,
मैं अपने मन का गान किया करता हूँ।

कठिन शब्दार्थ- जग-जीवन = संसारिक जीवन। ***भार*** = उत्तरदायित्व, जिम्मेदारी। ***झंकृत*** = उत्पन्न कर दी, मधुर बनाया। ***साँसों के दो तार*** = जीवनरूपी वीणा। ***स्नेह सुरा*** = प्रेम की मस्ती। ***पान*** = पीना, आनंद लेना। ***जग की गाते*** = अन्य लोगों को सुहाने वाली बातें करते हैं। ***मनका गान*** = अपने मन को सुहाने वाली बातें।

संदर्भ तथा प्रसंग - प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक ***सृजन*** में संकलित ***आत्मपरिचय*** कविता से लिया गया है। इसके रचयिता कवि ***हरिवंश राय बच्चन*** है। कवि बता रहा है कि वह जीवन के उत्तरदायित्वों को निभाते हुए, सभी के प्रति प्यार और कृतज्ञता व्यक्त करता है। वह जग सुहाती बातें न करके अपने मन के गीत गाया करता है।

व्याख्या- कवि कहता है कि इस सांसारिक जीवन का भार में अपने कंधों पर लिए हुए फिरता हूं। जीवन की सारी जिम्मेदारियां मेरे ऊपर ही हैं लेकिन फिर भी मैं अपने जीवन में सबके लिए प्रेम स्नेह और सहानुभूति लिए हुए रहता हूं।
कवि कहता है कि किसी ने मेरे हृदय की कोमल भावनाओं को छूकर हृदय रूपी वीणा को झंकृत कर दिया है मैं ऐसे ही अपनी सांसों के दो तार लिए हुए इस संसार में फिरता हूं।
कवि का हृदय सभी के लिए प्रेम और स्नेह भरा हुआ है इसलिए वह कहता है कि मैं स्नेह रूपी सुरा का पान करता हूं अर्थात स्नेह रूपी शराब पीकर के मस्त रहता हूं। मैं इस भौतिक संसार की बातों पर कोई ध्यान नहीं देता हूं। मैं तो अपनी मस्ती में ही रहने वाला हूं। कवि कहता है कि संसार में उन्हीं की पूछ होती है जो उनकी हां में हां मिलाते हैं। जो रसूखदारों के गीत गाते हैं संसार में उन्हें को पूछा जाता है। कवि कहता है कि मैं तो अपने मनोभाव के गीत गाने वाला हूं। जो मुझे अच्छा लगता है मैं वही बात कहता हूं। व्यर्थ ही दूसरों के विचारों में अपनी हां नहीं मिलाता हूं।
विशेष-

1. कवि ने निजी प्रेम को स्वीकार किया है।
2. संसार के स्वार्थी स्वभाव पर टिप्पणी की है।
3. 'स्नेह-सुरा' व 'साँसों के तार' में रूपक अलंकार है।
4. 'जग-जीवन', 'स्नेह-सुरा' में अनुप्रास अलंकार है।
5. खड़ी बोली का प्रयोग है।
6. 'किया करता हूँ', 'लिए फिरता हूँ' की आवृत्ति में गीत की मस्ती है।

2. मैं निज उर के उद्‌गार लिए फिरता हूँ,
मैं निज उर के उपहार लिए फिरता हूँ,

है यह अपूर्ण संसार न मुझको भाता,
मैं स्वप्नों का संसार लिए फिरता हूँ।
मैं जला हृदय में अग्नि, दहा करता हूँ,
सुख-दुख दोनों में मग्न रहा करता हूँ;
जग भव-सागर तरने को नावे बनाए,
मैं भव मौजों पर मस्त बहा करता हूँ।

कठिन शब्दार्थ-निज = अपने। ***उर*** = हृदय। ***उद्‌गार*** = भावनाएँ, विचार। ***उपहार*** = प्रेमभाव, सद्‌भावनाएँ। ***अपूर्ण*** = अधूरा, मधुर भावनाओं से रहित। ***न भाता*** = अच्छा नहीं लगता। ***स्वप्नों का संसार*** = मन को सुहाने वाली भावनाएँ। ***जला हृदय में अग्नि*** = सांसारिक दुखों से त्रस्त मन। दहा करता हूँ = दुखी हुआ करता हूँ। ***मग्न*** = एक भाव से, अप्रभावित। ***भव-सागर*** = संसार रूपी सागर, जन्म-मरण का चक्र। ***तरने को*** = उद्‌धार पाने को। ***नाव*** = पुण्य कार्य। ***भव मौजों पर*** = सांसारिक जीवन की मस्ती॥

संदर्भ तथा प्रसंग -प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक ***सृजन*** में संकलित ***आत्मपरिचय*** कविता से लिया गया है। इसके रचयिता कवि ***हरिवंश राय बच्चन*** है।इसे अंश में कवि कह रहा है कि वह अपनी कविता द्‌वारा सभी के कल्याण की कामना करता रहता है। वह अपने सपनों के संसार में मग्न रहता है, वह सुख-दुख को समान भाव से ग्रहण करते हुए मस्ती के साथ जीवन बिताया करता है।

व्याख्या-कवि कहते हैं कि मैं इस संसार में अपने निजी विचारों को लिए हुए घूमता हूं। यह मेरे हृदय के उद्‌गार हैं। मैं अपने हृदय के भावों को ही उपहार स्वरूप धारण करके उन्हें लिए हुए फिरता हूं। मेरे लिए मेरे विचार ही जीवन का श्रेष्ठ उपहार है। कवि को सारा संसार अपूर्ण लगता है इसलिए वह कहता है कि यह संसार पूर्ण नहीं है, इसलिए मुझे अच्छा नहीं लगता है अतः मैं अपने सपनों का एक अलग संसार अपने मन में लिए फिरता हूं। कवि कहता है कि मेरे हृदय में प्रेम, सहानुभूति, दया करुणा इत्यादि की अग्नि सदैव जलती रहती है और उसी अग्नि में मैं तपा करता हूं। कवि को सुख और दुख दोनों समान अनुभव होते हैंयद्‌यपि संसार के कष्ट, अभाव और दुख-दर्द उसके मन को निरन्तर जलाते हैं, परन्तु उसके लिए सुख-दुख दोनों समान हैं। इसलिए वह सुख और दुख में समान रहने की बात करता है कवि कहता है कि मैं सुख और दुख में सदैव मदमस्त भाव से रहता हूं। सारे संसार के लोग इस संसार रूपी सागर को पार करने के लिए नाव बनाते हैं अर्थात पुण्य के काम करते हैं लेकिन मैं ऐसे संसार की मौजो पर अर्थात संसार के उतार-चढ़ाव पर मस्त भाव से आगे बढ़ता रहता हूं। मैं आनंद पूर्वक इस संसार रूपी सागर को पार कर रहा हूं।

विशेष-

(i) कवि ने प्रेम की मस्ती को प्रमुखता दी है।
(ii)विचारधारा की प्रमुखता है।
(iii) 'स्वप्नों का संसार' में अनुप्रास तथा 'भव-सागर' और 'भव मौजों' में रूपक अलंकार है।
(iv) खड़ी बोली का स्वाभाविक प्रयोग है।
(v) तत्सम शब्दावली की बहुलता है।
(vi) श्रृंगार रस की अभिव्यक्ति है।

3. मैं यौवन को उन्माद लिए फिरता हूँ,
उन्मादों में अवसाद लिए फिरता हूँ,
जो मुझको बाहर हँसा, रुलाती भीतर,
मैं हाय किसी की याद लिए फिरता हूँ।

कठिन शब्दार्थ-यौवन = जवानी। ***उन्माद*** = मस्ती, पागलपन। ***अवसाद*** = दुख, वेदना। ***बाहर*** = प्रकट रूप में। ***भीतर*** = मन में।

संदर्भ तथा प्रसंग -प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक ***सृजन*** में संकलित ***आत्मपरिचय*** कविता से लिया गया है। इसके रचयिता कवि ***हरिवंश राय बच्चन*** है। कवि इस अंश में अपनी परस्पर विरोधी मनोभावनाओं को व्यक्त कर रहा है।

व्याख्या- कवि हरिवंश राय बच्चन कहते हैं कि मैं हमेशा अपनी जवानी के आनंद और मौज मस्ती में रहता हूं। अपने जीवन का एक उन्माद मेरे हृदय में लिए हुए घूमता हूं और उन ही उन्मादों में कहीं मेरे मन में छुपा हुआ अवसाद भी है अर्थात अपनी प्रिय से विछोह के कारण कवि का हृदय दुखी भी रहता है। इसी अवसाद का वर्णन कवि यहां करते हुए कहता है कि यह ऐसा अवसाद है जिसके कारण मैं बाहर से तो हंसता हुआ रहता हूं लेकिन भीतर ही भीतर मुझे बहुत दुखी रहता हूं। कवि अपने हृदय में अपने प्रिय जनों की स्मृतियां बसाये हुए हैं। उनकी याद उसे प्रतिपल आती है इसीलिए वह अवसाद में रहता है।

विशेष-

(i) चार पंक्तियों में कवि ने आत्माभिव्यक्ति की है।
(ii) 'उन्मादों में अवसाद' में विरोधाभास अलंकार है।
(iii) 'लिए फिरता हूँ' की आवृत्ति से गेयता का गुण उत्पन्न हुआ है।
(iv) भाषा सरल, परिमार्जित, भावानुकूल और प्रवाहपूर्ण है।
(v) शैली परिचयात्मक तथा भावुकता में भीगी हुई है।

4. कर यत्न मिटे सब, सत्य किसी ने जाना?
नादान वहीं है, हाय, जहाँ पर दाना!
फिर मूढ़ न क्या जग, जो इस पर भी सीखे?
मैं सीख रहा हूँ, सीखा ज्ञान भुलाना!

कठिन शब्दार्थ-यत्न = उपाय। ***मिटे*** = मिट गए, संसार से चले गए। ***नादान*** = अज्ञानी ।

दाना = बुद्धिमान, ज्ञानी । ***मूढ़*** = मूर्ख। ***सीखे*** = ज्ञान पाने का यत्न करे। ***सीख रहा*** = प्रयत्न कर रहा हूँ॥

संदर्भ तथा प्रसंग -प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक ***सृजन*** में संकलित ***आत्मपरिचय*** कविता से लिया गया है। इसके रचयिता कवि ***हरिवंश राय बच्चन*** है।इस अंश में कवि सत्य की खोज में लगे लोगों को नादान बताते हुए, ज्ञान के अहंकार से मुक्त होने का संदेश दे रहा है।

व्याख्या- कवि कहता है कि बड़े-बड़े योगियों, ऋषि-मुनियों ने इस संसार के सत्य को जानने का प्रयास किया लेकिन कोई भी इस संसार के सत्य को नहीं जान पाया है। चारों तरफ सभी लोग धन, वैभव, ऐश्वर्य और भोग विलास की वस्तु का उपभोग कर रहे हैं। इन सभी लोगों को कवि ने नादान बताया है। कवि प्रश्न करता है कि क्या ऐसे लोग मूर्ख नहीं है जो अभी भी विषय वासनाओं का भोग करना सीख रहे हैं? मैं तो पहले से सीखी गई सारी पुरानी बातों को भुलाकर नहीं बातें सीखने का प्रयास करता हूं।

विशेष-

(i) 'कर यत्न मिटे सब, सत्य किसी ने जाना' पंक्ति में अनुप्रास अलंकार है।

(ii) 'नादान वहीं है, हाय, जहाँ पर दाना' में सूक्ति जैसा प्रभाव है।

(iii) उपर्युक्त पद्यांश की भाषा सरल एवं भावानुकूलखड़ी बोलीहै। कवि ने तत्सम शब्दावलीयुक्त खड़ी बोली का प्रयोग किया है। गीत छंद का प्रयोग हुआ है। कवि ने लय और तुक का ध्यान रखा है।

(iv) उपर्युक्त काव्यांश में 'कर यत्न मिटे सब, सत्य किसी ने जाना?' में प्रश्नालंकार का प्रयोग हुआ है। साथ ही विरोधाभास अलंकार का प्रयोग भी है।

5. मैं और, और जगे और, कहाँ का नाता,
मैं बना-बना कितने जग रोज मिटाता,
जग जिस पृथ्वी पर जोड़ा करता वैभव
मैं प्रति पग से उस पृथ्वी को ठुकराता!

कठिन शब्दार्थ-और = भिन्न, अलग। ***नाता*** = संबंध ***बना-बना*** = कल्पना कर-कर के। ***मिटाता*** = त्याग देता, भुला देता ।***जोड़ा करता*** = इकट्ठा किया करता है। ***वैभव*** = संपत्ति । ***प्रति*** = प्रत्येक। ***पग*** = पैर। ***ठुकराता*** = ठोकर मारता॥

संदर्भ तथा प्रसंग -प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक ***सृजन*** में संकलित ***आत्मपरिचय*** कविता से लिया गया है। इसके रचयिता कवि ***हरिवंश राय बच्चन*** है।कवि अपना तथा संसार का लक्ष्य अलग-अलग बता रहा है। उसे सांसारिक वैभव से कोई लगाव नहीं है।

व्याख्या- कवि के मन को यह संसार नहीं भाता है। वह कहता है कि मैं और जग और अर्थात में अलग हूं और यह संसार मुझसे अलग है। मेरा और इस संसार का आपस में कोई संबंध नहीं है। अर्थात हमारी विचारधाराएं आपस में नहीं मिलती है। विचारों के ना मिलने के कारण ही कवि कहता है कि मैं ऐसे संसार को रोज मिटाता हूं और अपने लिए आदर्श संसार की रचना करता हूं। कवि कहता है कि सारे संसार के लोग इस पृथ्वी पर अपने लिए वैभव, ऐश्वर्य और माला असबाब जोड़ते हैं। समृद्धि के साधन जुटाते हैं, लेकिन मुझे इन सुख के साधनों में कोई सरोकार नहीं है। मैं तो पग-पग पर इस पृथ्वी के इन सभी ऐश्वर्य और वैभव के साधनों को ठुकराता रहता हूं और सदा प्रेम और स्नेह के मार्ग पर आगे बढ़ता हूं।

विशेष-

(i) कवि ने अपनी अनुभूतियों का परिचय दिया है।

(ii) 'कहाँ का नाता' में प्रश्न अलंकार है।

(iii) और' की आवृत्ति में यमक अलंकार है।

(iv) 'कहाँ का' और 'जग जिस पृथ्वी पर' में अनुप्रास अलंकार की छटा है।

(v) श्रृंगार रस की अभिव्यक्ति है तथा खड़ी बोली का प्रयोग है।

6. मैं निज रोदन में राग लिए फिरता हूँ,
शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ,
हो जिस पर भूपों के प्रासाद निछावर,
मैं वह खंडहर का भाग लिए फिरता हूँ।

कठिन-शब्दार्थ-रोदन = रोना। ***राग*** = संगीत ***शीतल*** = सुनने में मधुर लगने वाली। ***वाणी*** = कविता, बोली। ***आग***= मन की व्यथा। ***भूप*** = राजा । ***प्रासाद*** = राज-भवन, महल। ***खंडहर*** = टूटा हुआ भवन।

संदर्भ तथा प्रसंग -प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक ***सृजन*** में संकलित ***आत्मपरिचय*** कविता से लिया गया है। इसके रचयिता कवि ***हरिवंश राय बच्चन*** है। कवि परस्पर विरोधी कथनों के द्वारा अपनी मनोभावनाओं से परिचित करा रहा है।

व्याख्या- कवि अपने प्रिय की याद में बड़ा व्याकुल रहता है। जब उसका ह्रदय रोता है तो उसकी अभिव्यक्ति कवि के गीतों में होती है। यद्यपि कवि की वाणी प्रेम और स्नेह से भरी हुई शीतलता लिए हुए हैं लेकिन फिर भी उसने प्रेम की तीव्र ऊष्मा विद्यमान है। प्रिय के वियोग में कवि का जीवन भग्नावशेष के समान हो गया है। परंतु फिर भी कवि कहता है कि मेरा जीवन खंडहर का ऐसा भाग है जिस पर राजाओं के बड़े-बड़े महलों को भी न्योछावर किया जा सकता है।

विशेष-

(i) अपनी कोमल और अति संवेदनशील भावनाएँ, कवि ने अपने सटीक शब्द-चयन से व्यक्त कर दी हैं।

(ii) भाषा सशक्त है। विरोधाभासी शैली मन को चकित करती है।

(iii) 'रोदन में राग' और 'शीतल वाणी में आग' में विरोधाभास अलंकार तथा 'बना-बना' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।

(iv) छायावादी झलक काव्यांश में आकर्षण उत्पन्न कर रही है।

7. मैं रोया, इसको तुम कहते हो गाना,
मैं फूट पड़ा, तुम कहते, छंद बनाना,
क्यों कवि कहकर संसार मुझे अपनाए,
मैं दुनिया का हूँ, एक नया दीवाना!

कठिन शब्दार्थ-रोया = अपनी पीड़ा व्यक्त की। ***गाना*** = कविता, गीत। ***फूट पड़ा*** = मन की वेदना प्रकट की। ***छंदबनाना*** = कविता रचना। ***दीवाना*** = मस्ती से जीने वाला।

संदर्भ तथा प्रसंग -प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक ***सृजन*** में संकलित ***आत्मपरिचय*** कविता से लिया गया है। इसके रचयिता कवि ***हरिवंश राय बच्चन*** है। इस अंश में कवि चाहता है कि संसार उसे एक कवि के रूप में नहीं एक मस्ती से जीने वाले व्यक्ति के रूप अपनाए।

व्याख्या-कवि कहता है कि जब मेरा हृदय प्रिय के वियोग में रोता है तो यह संसार उसे गीत गाना कहते हैं। जब मैं फूट पड़ता हूं अर्थात में अपने मनोभावों को अभिव्यक्त करता हूं तब यह संसार समझता है कि मैं छंद बना रहा हूं अर्थात काव्य रचना कर रहा हूं। सारा संसार कवि को कवि के रूप में स्वीकार करता है यह कवि को अच्छा नहीं लगता है। कवि नहीं चाहता है कि लोग उसे कवि के रूप में जाने। वह तो यह चाहता है कि यह सारा संसार उसे इस दुनिया का एक नया दीवाना या एक पागल प्रेमी समझे।

विशेष-

(i) कवि मस्त प्रकृति का व्यक्ति है। यह मस्ती उसके गीतों से फूट पड़ती है।

(ii) 'कवि कहकर' तथा 'झूम झुके' में अनुप्रास अलंकार और 'क्यों कवि . अपनाए' में प्रश्न अलंकार है।

(iii) खड़ी बोली का स्वाभाविक प्रयोग है।

(iv) 'मैं' शैली के प्रयोग से कवि ने अपनी बात कही है।

(v) श्रृंगार रस की अभिव्यक्ति हुई है।

(vi) 'लिए फिरता हूँ' की आवृत्ति गेयता में वृद्ध करती है।

(vii) तत्सम शब्दावली की प्रमुखता है।

8. मैं दीवानों का वेश लिए फिरता हूँ,
मैं मादकता नि:शेष लिए फिरता हूँ,
जिसको सुनकर जग झूम, उठे, लहराए,
मैं मस्ती का सन्देश लिए फिरता हूँ।

कठिन शब्दार्थ-वेश = रूप। ***मादकता*** = मस्ती, मोहकता। ***नि:शेष*** = सारी, सम्पूर्ण । ***झूम*** = प्रसन्न होकर। ***झुके*** = सम्मान दे, महत्त्व स्वीकार करे। ***लहराए*** = मस्त हो जाए। ***सन्देश*** = विचार, मन की बात॥

संदर्भ तथा प्रसंग -प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक ***सृजन*** में संकलित ***आत्मपरिचय*** कविता से लिया गया है। इसके रचयिता कवि ***हरिवंश राय बच्चन*** है। इस अंश में कवि सारे जगत को मस्ती भरे प्रेम का संदेश दे रहा है।

व्याख्या- कवि कहता है कि मै दीवानों का जैसे वेश लिए फिरता हूं अर्थात मेरी स्थिति पागल दीवाने जैसी हो गई है। मैं जहां भी जाता हूं सारा वातावरण आनंद और उल्लास से भर देता हूं। मेरे हृदय में अत्यधिक मादकता और उल्लास भरा हुआ है। मैं इस संसार को प्रेम और आनंद के गीत सुनाता हूं। उन गीतों को सुनकर सारा संसार झूमने, नाचने लगता है। इस पूरे संसार के लिए आनंद और मौज-मस्ती का संदेश लिए फिरता हूं।

विशेष-

(i) काव्यांश में लेखक ने जीवन को सहज मस्ती का और सबके प्रति प्रेम-भाव बनाये रखकर जीने का संदेश दिया है।

(ii) संसार के झंझट तो चलते रहेंगे, लेकिन व्यक्ति को मस्ती और प्रेम से जीवन बिताना चाहिए। सुख और दुख दोनों को समान भाव से ग्रहण करना चाहिए। काव्यांश से यह संदेश भी प्राप्त होता है।

(iii) भाषा भावों के अनुरूप और प्रवाहपूर्ण है।

(iv) कथन-शैली, व्यक्तियों के मन में सहज जीवन की प्रेरणा देने वाली है।

(v) 'झूम, झुके' में अनुप्रास अलंकार है।

Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg